ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 131-135**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

डिजिटलीकरण और युवा पहचानः शहरी उत्तर प्रदेश में आत्म–धारणा और ऑनलाइन आचरण का समाजशास्त्रीय परीक्षण

अमृतेश अवस्थी

असि0 प्रोफेसर–समाजशास्त्र, महात्मा गांधी मेमोरियल पी.जी. कालेज, सम्भल (उ0प्र0) भारत

Received-20.04.2025, Revised-27.04.2025, Accepted-03.05.2025 **E-mail : amriteshawasthi@gmail.com**

***सारांशः** यह शोध उत्तर प्रदेश के शहरी युवाओं में आत्म–धारणा और व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करते हुए, युवा पहचान पर डिजिटलीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करता है। अकादमिक शोध, सरकारी रिपोर्ट और उत्तर आधुनिकतावाद और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद जैसे सिद्धांतों सहित माध्यमिक शोध पर भरोसा करते हुए, शोध पहचान पर डिजिटल मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डालता है। पिछले अध्ययनों से पता चलता है कि सोशल मीडिया व्यक्तिगत ब्रांडिंग, आत्म–पहचान और सामाजिक संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण साइट बन गया है, लेकिन इसने पहचान प्रबंधन, सत्यापन और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का दबाव भी पैदा किया है। शोध धुंधली सार्वजनिक/निजी सीमाओं, एल्गोरिदम अनुपालन और भावनात्मक तनाव की उभरती घटनाओं की बात करता है। निष्कर्ष ने रेखांकित किया कि डिजिटलीकरण युवाओं की पहचान को गहराई से बदल रहा है, और हमारी समझ और रणनीतियों को डिजिटल युग में युवाओं को सशक्त बनाने के लिए अधिक डिजिटल चेतना और सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से सूचित दृष्टिकोण की आवश्यकता है।*

कुंजीभूत शब्द– डिजिटलीकरण, युवा पहचान, आत्म–धरणा, आनलाइन आचरण, उत्तर आधुनिकता, प्रतिकात्मक, अंतःक्रिया

परिचय–हाल के दशकों में, भारत ने डिजिटलीकरण की तीव्र और क्रांतिकारी प्रक्रिया से गुज़रा है, अपने सामाजिक–आर्थिक ताने–बाने को मज़बूत किया है और अपने नागरिकों के जीवन को बदल दिया है। मोबाइल इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग प्लेटफ़ॉर्म, परिवहन वेब प्लेटफ़ॉर्म सहित डिजिटल संसाधन अब सार्वजनिक बुनियादी ढाँचें और व्यक्तियों के जीवन की एक विशेषता के रूप में अंतर्निहित हैं (पियरसन, 2021)। डिजिटल इंडिया जैसी सरकारी पहलों से प्रेरित इस डिजिटल परिवर्तन ने इंटरनेट कनेक्टिविटी को बढ़ावा दिया है, ऑनलाइन लेन–देन को सक्षम किया है और हमारे संचार के तरीकों को डिजिटल बनाया है। भारतीय युवा, विशेष रूप से शहरी युवा, भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषाई अंतरों को पाटने वाले एक तरल और इमर्सिव डिजिटल स्पेस में भी शामिल हुए हैं।

शहरी युवा डिजिटल परिवर्तन से सबसे अधिक प्रभावित सामाजिक समूहों में से हैं। न केवल वे तकनीक को जल्दी अपनाने वाले हैं, बल्कि वे ऑनलाइन स्पेस बनाने में सक्रिय निर्माता भी हैं। शहरी युवाओं का समकालीन अनुभव निरंतर संपर्क, सोशल मीडिया इंटरैक्शन, डिजिटल स्व–प्रतिनिधित्व और शिक्षा, रोजगार और अवकाश में प्रौद्योगिकी के समावेश से निर्धारित होता है। इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, ट्विटर और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म को शामिल करते हुए डिजिटल संस्कृति ने युवाओं के बीच आत्म–प्रस्तुति और बातचीत के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान किए हैं, और वे समुदाय के नए रूपों के रूप में काम करते हैं (त्सालिकी, 2022)। ये प्लेटफॉर्म न केवल युवा लोगों के कामों को प्रभावित करते हैं, बल्कि वे क्या सोचते और महसूस करते हैं, वे खुद को कैसे देखते हैं और दूसरे लोगों को कैसे देखते हैं, इस पर भी असर डालते हैं।

डिजिटल संस्कृति के इस विकास ने युवा पहचान के निर्माण और समझ के बारे में महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय प्रश्न उठाए हैं। पिछली पीढ़ियों के लिए, पहचान का विकास मूल रूप से परिवार, स्कूल और भौतिक सहकर्मी समूह पर आधारित था; आज के युवा हाइब्रिड स्पेस में अपनी पहचान विकसित कर रहे हैं जो ऑफ़लाइन और ऑनलाइन को मिलाते हैं। आत्म–अवधारणाएँ ष्लाइक,ष टिप्पणियों, फ़िल्टर, हैशटैग और डिजिटल कथाओं से तेजी से प्रभावित होती हैं जिन्हें हम प्रत्येक बनाते हैं और जिनके साथ बातचीत करते हैं। निजी और सार्वजनिक पहचान के बीच का अंतर तेजी से अस्पष्ट होता जा रहा है, और प्रदर्शनकारी के रूप में स्वयं (जो काफी हद तक मानक है) तेजी से स्वीकार किया जा रहा है।

इसलिए, चिंता इस परिवर्तन को समझने पर केंद्रित है – कैसे डिजिटल उपकरण युवा पहचान को आकार दे रहे हैं, और क्या यह अनुभव सशक्तीकरण, अलगाव या दोनों का कुछ संयोजन है। समकालीन भारत में शहरी युवा, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के विविध और तेजी से बदलते राज्य में, इन सवालों की जांच के लिए एक महत्वपूर्ण रूपरेखा प्रदान करते हैं (प्रियम एट अल।, 2024)। डिजिटल तकनीक का उनका उपयोग वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण और सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन के बड़े पैमाने पर रुझान को प्रदर्शित करता है। लेकिन यह परिवर्तन एक समान नहीं है और यह लिंग, वर्ग, शिक्षा और शहरी बुनियादी ढांचे से भी निर्धारित हो सकता है, जो डिजिटल पहुंच और उपयोग में मध्यस्थता करता है। यह अध्ययन शहरी उत्तर प्रदेश के युवाओं पर ध्यान केंद्रित करके डिजिटलीकरण प्रक्रिया में एक समाजशास्त्रीय लेंस प्रदान करेगा। शोध का फोकस उत्तर प्रदेश के शहरी युवाओं पर होगा, लेकिन शोध उभरते विषयों पर प्रकाश डालेगा और साथ ही डिजिटल साक्षरता, युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य और डिजिटलीकरण के लिए सांस्कृतिक अनुकूलन की धारणा के बारे में चर्चा में योगदान देगा। इस अध्ययन के परिणाम उभरते भारत में युवाओं, डिजिटल व्यवहार और पहचान के साथ अपने काम में शिक्षकों, नीति निर्माताओं और समाजशास्त्रियों के लिए विशेष रूप से रुचिकर हो सकते हैं।

मीट्रिक	भारत (राष्ट्रीय)	उत्तर प्रदेश (शहरी)	स्रोत
इंटरनेट उपयोगकर्ता	806 मिलियन (जनसंख्या का 55.3%)	लगभग 30% इंटरनेट पहुंच	https://www.meltwater.com/en/blog/social-media-statistics-india
सोशल मीडिया उपयोगकर्ता	491 मिलियन (जनसंख्या का 33.7%)	डेटा निर्दिष्ट नहीं	research/Kantar_%20IAMAI%20report_2024_.pdf [20 मई 2025 को अभिगमित]।
औसत दैनिक इंटरनेट उपयोग	91 मिनट	शहरी उपयोगकर्ता ग्रामीण उपयोगकर्ताओं की तुलना में अधिक समय व्यतीत करते हैं	research/Kantar_%20IAMAI%20report_2024_.pdf [20 मई 2025 को अभिगमित]।
डिजिटल साक्षरता (आयु 15-29)	28.5% बुनियादी इंटरनेट कार्य कर सकते हैं	डेटा निर्दिष्ट नहीं	https://timesofindia.indiatimes.com/education/news/only-26-8-of-indian-youth-in-the-academic-age-group-have-internet-browsing-skills-can-this-impact-quality-education/articleshow/114280250.cms
स्मार्टफ़ोन का उपयोग (आयु 14-16)	76% लोग सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं	डेटा निर्दिष्ट नहीं	https://www.indiatoday.in/india/story/more-children-14-16-age-group-phone-social-media-education-report-2671646-2025-01-29
इंटरनेट उपयोगकर्ताओं के बीच लिंग वितरण	47% महिला, 53% पुरुष	डेटा निर्दिष्ट नहीं	https://m.economictimes.com/industry/telecom/telecom-news/indias-internet-user-base-to-surpass-900-million-by-2025-driven-by-rural-growth-report/articleshow/117304976.cms

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

साहित्य की समीक्षा–पहचान पर प्रमुख समाजशास्त्रीय सिद्धांतः डिजिटलीकरण और युवा पहचान पर चर्चा करने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अतीत में यहां तक कि वर्तमान स्थितियों में भी विभिन्न सिद्धांत–आधारित विचारों के साथ चर्चा की है। यहाँ, गेलर (2019) के अनुसार, यह शोध प्रबंध डिजिटल स्पेस में मानव पहचान की जटिलताओं पर विचार करता है, जिसमें माइक्रो, मेसो और मैक्रो वर्चुअल आयाम शामिल हैं। यह डिजिटल पहचान की प्रासंगिकता को शामिल करता है कि लोग कैसे बातचीत और वातावरण को नेविगेट करते हैं और होली जोन्स और मार्गरेट नेल्सन द्वारा उठाए गए डिजिटल पहचान के समस्याग्रस्त प्रतिनिधित्व को शामिल करते हैं। भविष्य कहनेवाला पुलिसिंग के आलोचक दावा करते हैं कि यह बहुत अधिक त्रुटि–प्रवण है और पहचान स्थापित करने में नस्लीय पूर्वाग्रहों को बनाए रखता है, जबकि ब्रेंटिंगम एट अल। (2018) के शोध में पाया गया है कि भविष्य कहने वाला पुलिसिंग एक निश्चित पहचान के रूप में मान्य है। शोध प्रबंध बड़े डेटा और सामाजिक भौतिकी पर विचार करता है, और सवाल करता है कि क्या किसी व्यक्ति के बारे में भविष्यवाणियां या कथन वास्तव में उनकी विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। दस्तावेज़ वास्तविकता के सामाजिक निर्माण पर विचार करता है, प्राकृतिक, व्यक्तिगत और सामाजिक पहलुओं के लिए लेखांकन करता है। ऑनलाइन पहचान निर्माण के बारे में बातचीत बड़े डेटा या व्यवहार अधिशेष प्राप्त करने के अर्थ के सार पर विचार करती है।

डिजिटल वास्तविकता की पहचान करने के लिए, स्ट्रोबर्ग और हॉलनर (2017) ने यहाँ यह जाँच करने का प्रयास किया कि उपभोक्ता डिजिटल संस्कृति में इमेजरी और विज्ञापन के माध्यम से अपनी पहचान परियोजनाओं पर कैसे बातचीत करते हैं। अस्तित्व–घटना संबंधी शोध रणनीति का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने पाया कि उपभोक्ता ष्लाइकष् के माध्यम से मान्यता और ध्यान प्राप्त करने के लिए बिलबोर्ड और मैनेजर की तरह अपने व्यक्तिगत ब्रांड को कृत्रिम रूप से क्यूरेट करते हैं। जब उपभोक्ता को नकली छवि बनाने की आवश्यकता होती है, तो Instagram के माध्यम से एक प्रामाणिक पहचान समस्याग्रस्त हो जाती है। शोध में हाइपररियलिटी, बिना मूल या वास्तविकता वाली छवि के बारे में चर्चाएँ शामिल हैं। थॉम्पसन एट अल (1989) के आधार पर, इस पर अध्ययन ने उपभोक्ताओं के ऑनलाइन व्यवहार और प्रचार की उनकी प्यास के बारे में उपयोगी जागरूकता भी प्रदान की और विपणक को अपनी सामग्री और रणनीतियों को तदनुसार समायोजित करने की अनुमति दी। शोध प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, उत्तर आधुनिकतावाद और व्यक्तिगत ब्रांडिंग के माध्यम से पहचान निर्माण के संदर्भ में डिजिटल संस्कृति के भीतर पहचान की बारीकियों को संबोधित करता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि सोशल मीडिया आत्म–प्रतिबिंब और परिप्रेक्ष्य को विकसित करता है, इसलिए प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और प्रभाव प्रबंधन की सराहना करना डिजिटल संस्कृति में प्रासंगिक है। ऐसा करने के लिए, डिजिटल संस्कृति में उपभोग अनुसंधान के निर्माणवादी दर्शन पर आधारित है, जहां उपभोक्ता सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से निरंतर अर्थ उत्पन्न करते हैं।

डिजिटल मीडिया और युवा व्यवहार पर पूर्व अध्ययनः भारतीय क्षेत्रों में डिजिटल मीडिया में युवाओं और नैतिक आतंक के आधार पर, राव और लिंगम (2021), इस तरीके से अतीत में किए गए विवरणों को बहुत विस्तार से बताते हैं। शहरी क्षेत्रों में लगभग 291 मिलियन उपयोगकर्ताओं के साथ, भारत में आईटी उद्योग द्वारा सूचित स्मार्टफोन प्रौद्योगिकी के लिए एक बढ़ता हुआ युवा बाजार है। स्मार्टफोन संस्कृति इस पीढ़ी के लिए एक महत्वपूर्ण है, जिसे अक्सर षडिजिटल मूल निवासीष कहा जाता है। इस तकनीक से प्रेरित जीवन शैली का उदय विनियमन की सामाजिक संस्कृतियों को शामिल करता है। यह शोध भारतीय समाचार मीडिया द्वारा भारतीय युवाओं के स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के उपयोग के चित्रण का पता लगाने के लिए गुणात्मक मीडिया विश्लेषण का उपयोग करता है। शोध में पाया गया है कि विशेषज्ञ दृष्टिकोण को सामने रखने वाले आख्यान स्मार्टफोन के बारे में नैतिक आतंक पैदा करते हैं, जबकि अधिकारियों के बयानों को सामने रखने वाले आख्यान स्मार्टफोन द्वारा उत्पन्न कथित जोखिमों का जवाब देते हैं। प्रिज़िबिल्स्की और वेनस्टीन (2017) के अनुसार, शोध स्मार्टफोन के उपयोग और पदार्थ के उपयोग के बीच भ्रामक संबंध को उजागर करता है, जिसमें इंटरनेट की लत और प्रौद्योगिकी की लत जैसे शब्द तर्क को उलझाते हैं। शोध भारत में स्मार्टफोन के उपयोग और सामाजिक वास्तविकता में बदलाव के बीच संबंधों की अधिक समझ के लिए तर्क देता है।

साहित्य में अंतराल– डिजिटलीकरण और पहचान पर शोध के फलने–फूलने के बावजूद, शहरी भारत में युवा, खास तौर पर उत्तर प्रदेश में, डिजिटल परिदृश्य में स्वयं और पहचान को कैसे समझते हैं, इसे समझने में महत्वपूर्ण ज्ञान अंतराल अभी भी मौजूद हैं। मौजूदा कार्य डिजिटल पहचान के बारे में सैद्धांतिक विचारों की महत्वपूर्ण समझ प्रदान करते हैं जैसे कि गेलर (2019), जो डिजिटल स्थानों में पहचान का बहुआयामी विवरण देता है; और प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद और उत्तर आधुनिक पहचान सिद्धांत (थॉम्पसन, एट अल, 1989) बड़े डेटा, व्यवहार अधिशेष और भविष्य कहनेवाला विश्लेषण जैसे लागू ढांचे के साथ पहचान के अनुभवों से संबंधित हैं। साहित्य में चर्चाएँ पश्चिमी संदर्भों और डिजिटल स्थानों पर भी बहुत ज़ोर देती हैं और सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ से भिन्न हैं।

स्ट्रोबर्ग और हॉलनर (2017) सोशल मीडिया (स्वीडन में उपलब्ध), विशेष रूप से इंस्टाग्राम पर पहचान के प्रदर्शनकारी और क्यूरेटेड तत्वों पर अस्तित्ववादी–घटना संबंधी ढांचे के भीतर चर्चा करते हैं, जो प्रामाणिकता और अतिवास्तविकता के बीच संघर्ष को उजागर करता है। उनके निष्कर्ष प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के विचारों और थॉम्पसन और अन्य (1989) द्वारा उत्तर आधुनिक पहचान सिद्धांतों के विचारों के अनुरूप हैं। हालाँकि, डिजिटलीकरण, पहचान और प्रामाणिकता के बारे में ये विचार भारत जैसे गैर–पश्चिमी, सामूहिक संस्कृति में तैयार किए जाने पर कम स्पष्ट हैं, जबकि ऑनलाइन पहचान, डिजिटल स्पेस और पहचान कार्य की बारीकियाँ – क्योंकि पहचान कार्य उन छापों से संबंधित है जो हम बनाते हैं, प्रस्तुत करते हैं, सामाजिक भूमिकाएँ निभाते हैं और प्रबंधित करते हैं और मान्यता चाहते हैं – भारत में युवाओं द्वारा इसका आनंद लिया जाता है, यह एक खराब जांच वाला क्षेत्र है।

स्थानीयकृत अध्ययन, जैसे कि राव और लिंगम (2021) द्वारा, भारतीय किशोरों में स्मार्टफोन के उपयोग को लेकर नैतिक भय की खोज करके इस असमानता को संबोधित करने का काम शुरू करते हैं। हालाँकि, वे युवाओं के अनुभवों के बजाय मीडिया और विनियमन के प्रवचनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। पिछले काम (प्रिज़बिल्स्की और वेनस्टीन, 2017) ने इंटरनेट और स्मार्टफोन की लत के मौजूदा आख्यानों को चुनौती दी है, जिसमें इस बात की अधिक जटिल समझ की आवश्यकता है कि कैसे प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन को सुगम बनाती है। हालाँकि, ये अध्ययन पूरी तरह से इस बात की जाँच नहीं करते हैं कि भारत में शहरी युवा अपनी डिजिटल पहचान कैसे बनाते हैं, उसका उपयोग करते हैं और उसे समझते हैं।

शहरी उत्तर प्रदेश में युवाओं के बीच डिजिटल संस्कृति, पहचान और स्वयं के बीच संबंधों की जांच करने के लिए बहुत कम अनुभवजन्य और सैद्धांतिक साहित्य उपलब्ध है – एक ऐसा राज्य जो बढ़ते शहरीकरण से गुजर रहा है, बड़ी युवा आबादी का अनुभव

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

कर रहा है, और तकनीकी पहुंच में वृद्धि देख रहा है। इस शोधपत्र का उद्देश्य शहरी उत्तर प्रदेश के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में युवाओं की पहचान का गुणात्मक विश्लेषण करके इस अंतर को भरना शुरू करना है, जिसमें विशेष रूप से इस बात पर ध्यान दिया गया है कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म उनकी आत्म–अवधारणा, ऑनलाइन प्रथाओं और मूल्यों में कैसे मध्यस्थता करते हैं। भौगोलिक और जनसांख्यिकीय विशिष्टता अतिसामान्यीकरण से बचने और डिजिटल युग में युवा अध्ययन में सार्थक योगदान देने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

शोध उद्देश्य और शोध प्रश्न– इस अध्ययन का उद्देश्य यह जांचना है कि डिजिटलीकरण उत्तर प्रदेश के शहरी युवाओं की आत्म–अवधारणा और ऑनलाइन प्रथाओं को कैसे प्रभावित कर रहा है। अध्ययन का उद्देश्य युवाओं के लिए पहचान के निर्माण में इंटरनेट उपयोग, सोशल मीडिया उपयोग (दूसरे व्यक्ति के साथ) और डिजिटल संचार के समाजशास्त्रीय प्रभाव की जांच करना है, जो कि अधिक पारंपरिक से लेकर तेजी से भीड़भाड़ वाले डिजिटल स्पेस में निरंतर परिवर्तन की अवधि के दौरान है। इसमें यह जांचना आवश्यक है कि शहरी युवाओं के लिए आत्म–प्रस्तुति, सामाजिक जुड़ाव और मूल्य निर्माण के लिए डिजिटल स्पेस क्या भूमिका निभाता है और ये बातचीत उनके दैनिक जीवन के अनुभवों पर कैसे आधारित हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि डिजिटलीकरण किस तरह से पारंपरिक सामाजिक मानदंडों के प्रतिमान को बदल रहा है जो, शहरी संदर्भों में काफी हद तक लागू होते हैं। अध्ययन में यह जांचने की अपेक्षा की जाती है कि ऑनलाइन व्यवहार और पहचान प्रतिनिधित्व के संबंध में भिन्नताएं कहां होती हैं, और यह जनसांख्यिकीय संकेतकों, उदाहरण के लिए, लिंग, सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि और शिक्षा से कैसे प्रभावित होती है। विशेष रूप से, इसका एक उद्देश्य यह स्थापित करना है कि क्या डिजिटल जुड़ाव सशक्तिकरण और जुड़ाव के मूर्त रूपों की ओर ले जाता है, या वियोग के नए रूप या सामाजिक दबाव या चिंता के तरीके प्रस्तुत करता है।

निम्नलिखित शोध प्रश्न अध्ययन का मार्गदर्शन करेंगे–

1. डिजिटलीकरण शहरी उत्तर प्रदेश में युवाओं की आत्म–भावना को किस प्रकार प्रभावित करता है?
2. डिजिटल प्लेटफॉर्म शहरी युवाओं के बीच पहचान के निर्माण और अभिव्यक्ति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
3. लिंग, वर्ग और शिक्षा में असमानताएं ऑनलाइन सहभागिता और डिजिटल आत्म–प्रस्तुति को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?
4. किशोर उच्च स्तर की डिजिटल संलग्नता के सामाजिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक निहितार्थों को क्या मानते हैं?
5. क्या डिजिटल वातावरण शहरी युवाओं के लिए मौजूदा सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को बढ़ावा देता है या उन्हें चुनौती देता है?

ये प्रश्न समाजशास्त्रीय संदर्भ में डिजिटलीकरण और युवा पहचान की जटिलताओं के सैद्धांतिक विचार और अनुभवजन्य परीक्षण दोनों के लिए आधार तैयार करेंगे।

कार्यप्रणाली– यह अध्ययन युवाओं में पहचान पर डिजिटलीकरण के समाजशास्त्रीय प्रभावों का पता लगाने के लिए एक द्वितीयक शोध दृष्टिकोण अपनाता है, विशेष रूप से शहरी उत्तर प्रदेश में आत्म–धारणा और ऑनलाइन व्यवहार पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करता है। उत्तरदाताओं या प्राथमिक डेटा से नए डेटा उत्पादन के बजाय, अध्ययन युवा पहचान के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका की जांच करने के लिए मौजूदा साहित्य, अकादमिक लेखों, नीति दस्तावेजों, सांख्यिकीय रिपोर्टों और डिजिटल व्यवहार पर अध्ययनों से आकर्षित होता है।

अध्ययन की विशेषताएँ– यह अध्ययन समाजशास्त्रीय अध्ययन ढांचे के साथ वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक है। अध्ययन मौजूदा स्रोतों और सिद्धांतों के विश्लेषण के माध्यम से युवा पहचान में पैटर्न, विषयों और परिवर्तनों का वर्णन करने का प्रयास करता है। विश्लेषण में इन स्रोतों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्याख्या करना और पहचान, मीडिया और प्रौद्योगिकी से संबंधित सिद्धांतों का उपयोग करना शामिल है।

डेटा स्रोत– इस अध्ययन में मुख्य रूप से विभिन्न अप्रत्यक्ष स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें शामिल हैंः

शैक्षणिक पत्रिकाएँ और पुस्तकेंः डिजिटल संस्कृति और पहचान निर्माण के बीच संबंधों को समझने के लिए समाजशास्त्र, मीडिया अध्ययन, युवा अध्ययन और मनोविज्ञान के क्षेत्रों में पत्रिकाओं से सहकर्मी–समीक्षित लेखों का उपयोग किया जाता है। प्रमुख स्रोतों में द जर्नल ऑफ यूथ स्टडीज, न्यू मीडिया एंड सोसाइटी, इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च और प्रासंगिक मोनोग्राफ शामिल हैं।

सरकारी रिपोर्ट और सर्वेक्षणः राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (एनएसएस), राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस), डिजिटल इंडिया प्रगति रिपोर्ट, तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (एमईआईटीवाई) के अभिलेख जैसे राष्ट्रीय डाटाबेस बहुमूल्य जनसांख्यिकीय और उपयोग संबंधी आंकड़ें उपलब्ध कराते हैं।

गैर सरकारी संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों की रिपोर्टः यूनेस्को, यूनिसेफ, इंटरनेट और मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (आईएएमएआई), और प्यू रिसर्च सेंटर सहित एजेंसियों की रिपोर्ट और श्वेत पत्र युवाओं के बीच डिजिटल व्यवहार, लिंग अंतर और सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तनों के बारे में समृद्ध अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

मीडिया लेख और केस स्टडीज़ः भारतीय शहरी युवा संस्कृति में डिजिटल रुझानों के बारे में प्रासंगिक जानकारी प्राप्त करने के लिए समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और ऑनलाइन स्रोतों से विश्लेषणात्मक लेख और प्रलेखित केस स्टडीज को शामिल किया गया है।

शोध प्रबंध और शोध प्रबंधः संबंधित विषयों पर भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा किए गए कुछ स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट शोध प्रबंधों की समीक्षा, क्षेत्रवार स्थानीयकृत, सूक्ष्म विवरण और अच्छी तरह से प्रलेखित परिणामों के लिए की जाती है।

विश्लेषणात्मक ढांचा– वर्तमान शोध में विषयगत सामग्री विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है। द्वितीयक डेटा को व्यवस्थित रूप से विषयगत रूप से वर्गीकृत किया गया है (जैसे डिजिटल स्व–प्रस्तुति, सोशल मीडिया का उपयोग, ऑनलाइन सत्यापन, साइबर–व्यवहार और मूल्य के पीढ़ीगत बदलाव)। प्रत्येक विषय को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाएगारू

1. एर्विंग गोफमैन का नाट्य सिद्धांत और डिजिटल प्रतिनिधित्व में स्वयं की प्रस्तुति,
2. मैनुअल कास्टेल्स नेटवर्क सोसायटी,

ASVP PIF-9.805 /ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14

3. बौद्रिलार्ड द्वारा उल्लेखित सिमुलैक्रा और हाइपररियलिटी, और
4. प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद पर आधारित पहचान सिद्धांत।

ये संकल्पनात्मक ढांचे यह स्पष्ट करने में सहायता करते हैं कि किस प्रकार डिजिटल स्थान युवाओं के व्यवहार और आत्म–पहचान को आकार देते हैं, साथ ही यह भी बताते हैं कि डिजिटल स्थान के परिणामस्वरूप अन्य लोग युवाओं को किस प्रकार देखते हैं।

भौगोलिक और जनसांख्यिकीय जोर– यह अध्ययन वैचारिक रूप से केन्द्रित है और उत्तर प्रदेश के शहरी केन्द्रों – अर्थात् लखनऊ, कानपुर, वाराणसी और मुरादाबाद – से संबंधित है। लक्ष्य समूह में 18 से 30 वर्ष की आयु के लोग शामिल हैं, जिनके सबसे अधिक सक्रिय डिजिटल उपयोगकर्ता होने की उम्मीद है। इन लोगों के बारे में विश्लेषण और डेटा द्वितीयक डेटा से प्राप्त और प्रस्तुत किए गए थे।

द्वितीयक अनुसंधान के उपयोग के लाभअध्ययन के लिए द्वितीयक शोध के उपयोग के कई लाभ हैं। द्वितीयक शोध शोधकर्ताओं को प्राथमिक शोध के साथ अक्सर अनुभव की जाने वाली समय सीमा और अन्य सीमाओं के बिना पैटर्न और रुझानों पर विचार करने की अनुमति देता है। यह क्षेत्रों के साथ–साथ वर्षों की तुलना करना और विशेषज्ञों द्वारा विश्लेषण के आधार पर आम सहमति विकसित करना संभव बनाता है। यह अधिक सामान्य जानकारी के साथ–साथ पुष्ट डेटा प्रदान करता है।

नुकसान/द्वितीयक शोध में भी कुछ कमियाँ हैं और कुछ कमियाँ भी हैं। कुछ मामलों में, जानकारी शहरी उत्तर प्रदेश के लिए समय पर या प्रासंगिक नहीं हो सकती है। शोधकर्ता को यह भी विचार करना चाहिए कि ऑनलाइन संसाधन विश्वसनीय, पक्षपाती या वस्तुनिष्ठ है (अक्सर मीडिया स्रोत के मामले में ऐसा होता है)। हालाँकि, यदि कोई कई स्रोतों की तलाश करता है और कुछ सूचनाओं को छानता है, तो वह जानकारी पर बहुत भरोसा कर सकता है।

अध्ययन में युवा पहचान के लिए डिजिटलीकरण के निहितार्थों की समृद्ध और प्रासंगिक समझ प्रदान करने के लिए द्वितीयक शोध विधियों का उपयोग किया गया है। साथ ही, शोध ने भारत के सबसे बड़े राज्य में शहरी युवाओं के आत्म–प्रतिनिधित्व, मूल्यों और डिजिटल सामर्थ्य और उनकी परिभाषा संबंधी विशिष्टता में समाजशास्त्रीय अंतर्दृष्टि विकसित करने के लिए मौजूद चीज़ों का लाभ उठाया है।

स्थापित सिद्धांतों के संबंध में प्रमुख खोजों का विश्लेषण– द्वितीयक स्रोतों की समीक्षा से एक स्पष्ट पैटर्न का पता चलता है। डिजिटलीकरण केवल एक तकनीकी बदलाव नहीं है, बल्कि युवा लोग अपनी पहचान को कैसे समझते हैं और उसे कैसे व्यक्त करते हैं, इसका एक समाजशास्त्रीय परिवर्तन है। गॉफ़मैन (1956) के नाट्यशास्त्र के ढांचे के अनुसार, डिजिटल स्व कई आभासी श्मंचोंश – इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब और लिंक्डइन – पर एक प्रदर्शन के रूप में कार्य करता है – सभी एक अलग स्व के लिए आह्वान करते हैं। गेलर (2019) ने डिजिटल पहचान के माइक्रो (व्यक्तिगत), मेसो (समूह) और मैक्रो (सामाजिक) क्षेत्रों पर विचार किया ताकि यह दिखाया जा सके कि आज के युवाओं की पहचान व्यक्तिगत डेटा, सहकर्मी पुष्टि और दृश्यता के लिए एल्गोरिदम द्वारा कैसे आकार लेती है।

थॉम्पसन एट अल. (1989) और स्ट्रोबर्ग और हॉलनर (2017) इस बातचीत में उत्तर आधुनिक सिद्धांत प्रदान करते हैं और दिखाते हैं कि हाइपररियलिटी वह जगह है, जहाँ किसी व्यक्ति का डिजिटल ब्रांड और छवि अक्सर व्यक्ति को अपने में समाहित कर सकती है। शहरी उत्तर प्रदेश के युवाओं को अक्सर वैश्विक जीवनशैली मानकों द्वारा आकार दिया जाता है, जिससे डिजिटल स्पेस में खुद को आकर्षक, सफल और सामाजिक रूप से जुड़े हुए के रूप में पेश करने का अतिरिक्त दबाव पैदा होता है। यह विषय प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है, जो पहचान को भौतिक और डिजिटल दोनों द्वारा मध्यस्थता वाले सामाजिक निर्माण के रूप में देखता है।

युवा पहचान पर डिजिटलीकरण का प्रभाव– डिजिटलीकरण ने लाइक, व्यू, फॉलोअर्स और कमेंट के माध्यम से बड़े पैमाने पर बाहरी मान्यता के माध्यम से आत्म–धारणा का एक नया मॉडल बनाया है। स्वयं अब मात्रात्मक है, और युवा लोग अक्सर ऑनलाइन आकर्षित होने वाले ध्यान और अपने सामाजिक मूल्य के बीच संबंध बना रहे हैं। उत्तर प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में, जहाँ शिक्षा और विभिन्न जीवन शैली के संपर्क बहुत अलग हैं, युवा लोग अपने डिजिटल जुड़ाव के माध्यम से सशक्तिकरण और चिंता का अनुभव कर रहे हैं। ऑनलाइन एक सावधानीपूर्वक क्यूरेट की गई और अक्सर आदर्शित पहचान बनाने की प्रक्रिया पहचान के विखंडन और कभी–कभी डिजिटल स्व और वास्तविक स्व के बीच असंगति की ओर ले जाती है।

डिजिटल उपकरण अन्वेषण और स्वायत्तता के माध्यम के रूप में काम करते हैं। सोशल मीडिया युवाओं को अपनी राय व्यक्त करने, नई प्रतिभाओं और उपसंस्कृतियों को साझा करने का अवसर प्रदान करता है जो उन्हें कहीं और नहीं मिल सकता है। हालांकि इस सशक्तिकरण के साथ कुछ कमियां भी हैं। राव और लिंगम (2021) चर्चा करते हैं कि भारत में युवाओं और उनके डिजिटल व्यवहार के बारे में मीडिया की कहानियां किस तरह से विचलन या जोखिम भरे व्यवहार का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो स्मार्टफोन के साथ उनके जुड़ाव को लेकर डर पैदा करती हैं। यह कलंक और डिजिटल स्पेस के सहज प्रदर्शनकारी पहलू कई युवाओं को प्रामाणिकता और आत्मसम्मान के मुद्दों से जूझने के लिए प्रेरित करते हैं।

आत्म–धारणा और सामाजिक अंतःक्रिया में उभरते रुझान– डिजिटलीकरण के बढ़ने के साथ, युवाओं की आत्म–धारणा और सामाजिक अंतःक्रियाओं के संबंध में कई रुझान उभर रहे हैंः

व्यक्तिगत ब्रांडिंग और छवि निर्माणरूयुवा लोग जानबूझकर छवि निर्माण को लक्षित कर रहे हैं – यहां तक कि मार्केटिंग तकनीकों का उपयोग करके अपने ब्रांड को डिजाइन करने के तरीके भी अपना रहे हैं। ब्रांडिंग का यह विचार व्यक्तिगत सौंदर्यशास्त्र और जीवनशैली के पहलुओं को दर्शाता है, जिसे पहचानने के लिए, युवा लोग लगातार खुद को वर्तमान को बनाए रखने और अपडेट करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं, इस प्रकार आत्म–निगरानी के एक चक्र को मजबूत कर रहे हैं, जो रोजमर्रा की जिंदगी से अविभाज्य है।

निजी/सार्वजनिक जीवन का धुंधलापनः सोशल नेटवर्किंग ने निजी और सार्वजनिक पहचान के बीच के अंतर को मौलिक रूप से खत्म कर दिया है। निजी शेयरिंग ने टेक्स्टिंग (अंतरंग पल) या पोस्टिंग (व्यक्तिगत विचार और भावनात्मक स्थिति) के माध्यम से युवा लोगों के निजी क्षेत्रों में प्रवेश किया है और इसने रिश्तों और भावनात्मक अभिव्यक्ति के बारे में युवाओं के दृष्टिकोण को मौलिक रूप से बदल दिया है। विश्वास, अंतरंगता और सहकर्मी संबंधों के संबंध में भी इसी तरह की चिंताएँ पैदा हुई हैं।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

एल्गोरिथम पूर्वाग्रह और संलग्नता अनुरूपताः डिजिटल दुनिया में अंतर्निहित पूर्वाग्रह व्याप्त है। एल्गोरिदम दृश्यता और लोकप्रियता के लिए जिम्मेदार हैं, और एल्गोरिदम द्वारा निर्देशित उनके विचार/व्यवहार केवल आदतों (प्रवृत्तियों, चुनौतियों, और दूसरों के लिए सामान्य रूपरेखाओं के साथ निर्देशित सभी सामग्री) के माध्यम से युवाओं के व्यवहार को नियमित करते हैं। इस प्रकार, युवा व्यक्तिवाद या अभिव्यक्ति की समृद्धि के लिए कम जगह छोड़ते हैं और अन्य अनुरूपताओं को शामिल करते हैं, खासकर जब वे छोटे और अधिक संवेदनशील होते हैं। मानसिक स्वास्थ्य और तनाव से पहचान तक एक 'सफल' या 'खुश' दुनिया में दिखने के दबाव ने तनाव, तुलना से संबंधित चिंता और व्यक्तिगत रूप से सीमित सामाजिकता के लक्षणों को जन्म दिया है।

निष्कर्ष रूप में, डिजिटलीकरण शहरी उत्तर प्रदेश में युवा पहचान के विकास से निकटता से जुड़ा हुआ है। यह आत्म–अभिव्यक्ति के नए रूप और दूसरों से जुड़ने के नए रास्ते खोलता है, लेकिन जटिल मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय दबाव भी पैदा करता है। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, उत्तर आधुनिकतावाद और सामाजिक निर्माणवाद लेखकों द्वारा प्रलेखित परिवर्तनों को समझने के लिए उपयोगी लेंस प्रदान करते हैं। सभी तर्क देते हैं कि डिजिटल अस्तित्व सामाजिक अस्तित्व से अलग अस्तित्व नहीं है, बल्कि इसका एक महत्वपूर्ण विस्तार है।

निष्कर्ष– डिजिटल युग ने शहरी उत्तर प्रदेश में युवाओं की आत्म–धारणा और अंतःक्रियाओं को नाटकीय रूप से बदल दिया है। द्वितीयक शोध और समाजशास्त्रीय सिद्धांत के आधार पर, यह अध्ययन दर्शाता है कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म न केवल संचार के साधन हैं, बल्कि पहचान के निर्माण, संरक्षण और प्रतियोगिता के लिए प्रभावशाली स्थान भी हैं। वैश्विक संकेतों और स्थानीय परिस्थितियों से प्रभावित युवा लोग हमेशा अपने सोशल नेटवर्क से लाइक, शेयर और टिप्पणियों के माध्यम से मान्यता और महत्व प्राप्त करने के लिए आत्म–प्रस्तुति में लगे रहते हैं। यह उनके लिए सशक्तिकरण, रचनात्मकता और सामाजिक जुड़ाव के नए स्रोत बनाता है; हालाँकि, यह उनकी पहचान के अनुरूप होने, प्रदर्शन करने और उसे विभाजित करने का दबाव भी पैदा करता है।

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि सोशल मीडिया और डिजिटल उपकरणों ने सार्वजनिक और निजी के बीच के अंतर को धुंधला कर दिया है, जिससे सामाजिकता, संचार, अभिव्यक्ति और आत्म–सम्मान की नई मानक प्रथाओं में योगदान मिला है। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद, उत्तर आधुनिकतावाद और डिजिटल पहचान से प्रदान किए गए दृष्टिकोण आधुनिक युवा अनुभव का गठन करने वाले जटिल व्यवहारों की समझ प्रदान करते हैं। हालाँकि, डिजिटल जुड़ाव भावनात्मक थकावट, मूल्यों में बदलाव और अधिक तीव्र सामाजिक तुलनाओं को भी जन्म दे रहा है। उम्मीद है कि यह अध्ययन युवा जीवन से अलग न होकर, उसके विस्तार के रूप में डिजिटल व्यवहार की अधिक परिष्कृत समझ की आवश्यकता की ओर इशारा करेगा। इसके लिए डिजिटल साक्षरता, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक नीतियों को बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि डिजिटल के संदर्भ में चुनौतियों और अवसरों के बीच बातचीत में युवाओं का समर्थन किया जा सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. गेलर, एसआई, 2019. डिजिटल सेल्फ की अवधारणाएँरू पहचान निर्माण, प्रदर्शन और ऑनलाइन सामाजिक वास्तविकता को समझना (डॉक्टरेट शोध प्रबंध, केंट विश्वविद्यालय)।
2. ब्रैंटिंगम, पी.जे., वैलासिक, एम. और मोहलर, जी.ओ., 2018. क्या पूर्वानुमानित पुलिसिंग पक्षपातपूर्ण गिरफ़्तारियों को जन्म देती है? यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण के परिणाम। सांख्यिकी और सार्वजनिक नीति, 5(1), पृ.1–6.
3. स्ट्रोबर्ग, वाई. और हॉलनर, ए., 2017. डिजिटल वास्तविकता में पहचान को समझना।
4. थॉम्पसन, सी.जे., लोकेन्डर, डब्ल्यू.बी. और पोलियो, एच.आर., 1989. उपभोक्ता अनुभव को उपभोक्ता अनुसंधान में वापस लानारू अस्तित्व–घटना विज्ञान का दर्शन और विधि। जर्नल ऑफ कंज्यूमर रिसर्च, 16(2), पृ.133–146.
5. राव, एन. और लिंगम, एल., 2021. स्मार्टफ़ोन, युवा और नैतिक आतंकरू भारत में प्रिंट और ऑनलाइन मीडिया कथाओं की खोज। मोबाइल मीडिया और संचार, 9(1), पृ.128–148.
6. प्रिज़िबिल्स्की, ए.के. और वेनस्टीन, एन., 2017. गोल्डीलॉक्स परिकल्पना का एक बड़े पैमाने पर परीक्षणरू डिजिटल–स्क्रीन उपयोग और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंधों को मापना। मनोवैज्ञानिक विज्ञान, 28(2), पृ. 204–215।
7. पियर्सन, जे., 2021. उलझे हुए बुनियादी ढांचे के रूप में डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मरू मैसेजिंग ऐप्स में सार्वजनिक मूल्यों और विश्वास को संबोधित करना। यूरोपियन जर्नल ऑफ़ कम्युनिकेशन, 36(4), पृ.349–361.
8. त्सालिकी, एल., 2022. डिजिटल मीडिया पारिस्थितिकी में युवा स्वयं का निर्माणरू युवा संस्कृतियाँ, अभ्यास और पहचान। सूचना, संचार और समाज, 25(4), पृ.477–484.
9. प्रियम, एम., मेहता, एम.जी. और वैद, डी., 2024. भारत में शहरी परिवर्तन, युवा आकांक्षाएँ और शिक्षा। दक्षिण एशियाई इतिहास और संस्कृति, 15(2), पृ.131–141.
10. गोफ़मैन, ई., 1956. सम्मान और आचरण की प्रकृति। अमेरिकी मानवविज्ञानी, 58(3), पृ.473–502.
11. स्ट्रोबर्ग, वाई. और हॉलनर, ए., 2017. डिजिटल वास्तविकता में पहचान को समझना।

*****